Main points of Distinction between Central Bank and Commercial Bank:

केन्द्रीय बैंक और व्यावसायिक बैंकों की कार्य प्रणाली में बहुत सारे अंतर हैं। सर्वप्रथम तो केन्द्रीय बैंक का देश की मौद्रिक एवं बैंकिंग व्यवस्था में केन्द्रीय स्थान होता है। इसका उद्देश्य देश की बैंकिंग व्यवस्था का इस प्रकार से नियंत्रण करना है जिससे कि सरकारी मौद्रिक नीति के कार्यान्वयन में विशेष सुविधा हो सके। इस प्रकार केन्द्रीय बैंक की कार्य-प्रणाली व्यावसायिक बैंकों से सर्वथा भिन्न होती है। इनमें प्रायः निम्नांकित अंतर पाये जाते हैं:-

(1) किसी देश में एक ही केन्द्रीय बैंक होता है जबकि व्यावसायिक बैंकों की संख्या बहुत अधिक होती है।

(2) व्यावसायिक बैंकों की तरह केन्द्रीय बैंक का उद्देश्य अधिकतम मुनाफा कमाना नहीं होता। इसका प्रधान उद्देश्य देश में आर्थिक स्थायित्व की स्थापना के लिए समुचित मौद्रिक नीति का कार्यान्वयन करना है। इस उद्देश्य से देश की समग्र मौद्रिक प्रणाली पर इसका नियंत्रण अनिवार्य हो जाता है। इस प्रकार केन्द्रीय बैंक का देश के व्यावसायिक बैंकों पर नियमन एवं नियंत्रण रहता है।

(3) केन्द्रीय बैंक देश की मुद्रा का उद्गम होता है।

Scanned with CamScanner

आजकल प्रायः प्रत्येक देश में पत्र-मुद्रा जारी करने का एक मात्र अधिकार देश के केन्द्रीय बैंक को ही प्राप्त है। अतः केन्द्रीय बैंक पर सरकार का नियन्त्रण अनिवार्य है। सर्वप्रथम तो यह कहा जाता है कि केन्द्रीय बैंक की व्यवस्था सरकारी विभाग की तरह ही की जा सकती है, किन्तु ऐसा होने से बैंक के दिन-प्रति-दिन के कार्य में अत्यधिक सरकारी हस्तक्षेप होने लगेगा जिससे बैंक की कार्यक्षमता में कमी आ जायेगी तथा केन्द्रीय बैंक सरकार के हाथ की कठपुतली बन जायेगी। दूसरा दृष्टिकोण यह है कि केन्द्रीय बैंक पर राज्य का सामान्य नियंत्रण रहे किन्तु इसकी व्यवस्था स्वतंत्र रूप से होनी चाहिए।

आजकल अधिकांश देशों में राज्य एवं केन्द्रीय बैंक का सम्बन्ध प्रायः इसी प्रकार का है। केन्द्रीय बैंक साधारणतया राज्य के स्वामित्व तथा नियंत्रण के अन्तर्गत रहता है, किन्तु इसकी व्यवस्था स्वतंत्र रूप से होनी चाहिए। राज्य केन्द्रीय बैंक के मुनाफे में भी हिस्सा बँटाता है तथा इसके संचालक मंडल की नियुक्ति में राज्य का हाथ रहता है किन्तु राज्य द्वारा निर्धारित नियमों के अन्तर्गत बैंक स्वतंत्रता पूर्वक

अपना कार्य सम्पन्न करता है।

इस प्रकार Montague Norman के शब्दों में, "राज्य एवं केन्द्रीय बैंक का सार्वाधिक सुन्दर सम्बन्ध यही है जिसमें राज्य एवं बैंक दोनों की नीति में उचित सामंजस्य हो।" भिन्न भिन्न देशों में केन्द्रीय बैंक के ढाँचे में विभिन्नता पायी जाती है, किन्तु आधुनिक युग में सर्वत्र केन्द्रीय बैंक प्रायः सार्वजनिक संस्था के रूप में ही कार्य करते हैं तथा इसकी व्यवस्था भी स्वतन्त्र रूप से की जाती है।